# उपशास्त्रीय गायन शैलियों में तबला–संगत का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
आगरा से संगीत में पीएच०डी० की उपाधि
हेतु शोध–प्रबंध की प्रस्तावित
की रूपरेखा


**शोधार्थी**
**भानु प्रताप सिंह**

**शोध–निर्देशक**
**डॉ० शिवेंद्र प्रताप त्रिपाठी**
असिस्टेंट प्रोफेसर
संगीत विभाग

**शोध सह–निर्देशिका**
**प्रो० सुधा सहगल**
संगीत विभाग



## संगीत विभाग, कला संकाय

## दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

## दयालबाग आगरा–282005

## 2021

**भूमिका :–**

उपशास्त्रीय संगीत वह संगीत है जिसमें मानवीय भावनाओं को अत्यंत मधुर, गहन तथा सशक्त प्रकट करने की अनुपम छमता है। उपशास्त्रीय अर्थात उप (समीप रहने वाला) तथा शास्त्रीय (जो शास्त्रबद्ध अथवा नियमबद्ध हो), अर्थात ऐसा संगीत जो शास्त्रीयता के समीप रहे तथा जिसमें नियमों का पालन शिथिलता से होता हो। उपशास्त्रीय संगीत की वाहक गायन शैलियाँ, जैसे :– ठुमरी, दादरा, टप्पा, कजरी, होरी, चैती, सावनी, मल्हार, सादरा इत्यादि आज भी उत्तर भारत में कीर्तिमान स्थापित कर रही है।

इन सभी गायन शैलियों में राग–प्रयोग, राग–चलन, स्वर–भेद, स्वर–लगाव जैसे नियमों का कठोरता से पालन नहीं होता अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो यह सभी गायन शैलियाँ गायक कलाकार को अपनी स्वतंत्र सृजनात्मक एवं कलात्मक सोच को बृहद् विस्तार प्रदान करने हेतु स्वतंत्र कर देती है। जहाँ एक ओर शास्त्रीय संगीत में राग प्रयोग के सूक्ष्म भेद तथा राग क्षेत्र में निर्वाहित होने वाले महत्वपूर्ण राग लक्षणों को अनुशासित रीति से व्यवस्थित किया जाता है वहीं दूसरी ओर उपशास्त्रीय गायन शैलियों में यही प्रयोग रागेतर सम्भावनाओं, सौन्दर्यपूर्ण स्वर समूहों, कलात्मक बोल बनाव, अत्यंत सूझ–बूझ युक्त बोल–बाँट का काम, रचनात्मक बोल आलाप जैसे घटकों में परिवर्तित होकर गायन शैली को गायक कलाकार की कल्पना की उड़ान को तो समृद्ध करते ही है साथ ही साथ गायन–शैली को भी विकसित एवं परिपक्व कर देते हैं।

उपशास्त्रीय गायन शैलियों में ताल का ढाँचा तो सरलता, सहजता एवं सुगमतायुक्त होता है– जैसे– दादरा, कहरवा, रूपक, जत, दीपचंदी, चाँचर इत्यादि किन्तु वैविध्यपूर्ण ताल प्रयोग अत्यंत कलात्मक, रचनात्मक, सृजनात्मक, सौंदर्यात्मक शैली–अनुरूप नीर–क्षीर विवेकपूर्ण होता है अर्थात उपर्युक्त विशिष्ट तत्व इन गायन शैलियों के साथ तबला संगत द्वारा ही न्यायपूर्ण सिद्ध होता है। ठुमरी, दादरा, कजरी, होरी, चैती, सावनी, मल्हार जैसी गायन शैलियों में ताल एवं प्रकार प्रयोग मुखड़े, मोहरे, छोटी–छोटी तिहाईयाँ, वज़न एवं छंद प्रधान तिहाइयाँ, बोल–बढ़त एवं लग्गी–लड़ी का प्रयोग तबला कलाकार अत्यंत सूझ–बूझ, कला–कौशल व रचनाधर्मिता के साथ करता है। उपशास्त्रीय संगीतात्मक

विधाओं के साथ प्रयुक्त होने वाली तबला–संगत की विशिष्टताओं की और अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया जिसका विवरण इस प्रकार है–

**पुस्तकें :-**

1. उपशास्त्रीय संगीत अंक : गर्ग, लक्ष्मी नारायण, 2003

2. बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत : सहगल, सुधा, 2007

**शोध–प्रबन्ध :-**

1. उपशास्त्रीय संगीत के अंतर्गत आने वाली विभिन्न गायन शैलियों में प्रयुक्त रागों एवं तालों की व्यावहारिकता : शर्मा, चारू, 2016

2. भारतीय शास्त्रीयसंगीत, उपशास्त्रीय ओ सुगम संगीतमधे संवादिनीचा प्रभावः एक अभ्यास : कुलकर्णी, सुधांशु रामचंद्र, 2012

3. उत्तर भारत के उपशास्त्रीय विधाओं का सांगीतिक विश्लेषण : ठुमरी, टप्पा, कजरी तथा चैती के संबंध में : दीपमाला, 2006

4. कथक नृत्य के साथ तबला संगति (इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय): नागेश्वर लाल करन, 1996

5. ठुमरी : एक उपशास्त्रीय गीत प्रकार, समग्र अभ्यास (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर) : देसाई, विनोद विश्वनाथ ठाकुर, 2011

6. ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ (दिल्ली विश्वविद्यालय) : शुक्ल, शत्रुघ्न, 1974

7. ठुमरी के विकास में महिला कलाकारों का योगदान (कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय) : शर्मा, अरूणकुमार, 1993

**पत्र–पत्रिकाएँ :-**

1. उपशास्त्रीय संगीत और बन्दिशें (तबले की परंपरागत वादन शैली का अस्तित्व वर्तमान परिप्रेक्ष्य में – राष्ट्रीय संगोष्ठी, सागर), मिश्रा, पूजा, 2018

2. ठुमरी गायन में तबला संगति भूमिका एवं विश्लेषण : खरे, सुरभि, 2018

**तबला वाद्य के संदर्भ में संबन्धित साहित्य :-**

**शोध प्रबन्ध :-**

1. तबला शिक्षण के माध्यम के रूप में कैसेट श्रव्य उपकरण तैयार करना (डी.ई.आई.डीम्ड यूनिवर्सिटी) : भट्ट, डॉ. नलिम सुंदरम 1997
2. तबला वादन की शिक्षण पद्धति (एक विवेचनात्मक अध्ययन) (डी.ई.आई. डीम्ड यूनिवर्सिटी), शर्मा, डॉ. नीलू 1996
3. इंटरनेट माध्यम से तबला शिक्षण की संभावनाएं (डी.ई.आई. डीम्ड यूनिवर्सिटी) : शर्मा, अर्चना 1013
4. तबले की बनारस घराने की रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन (डी.ई.आई. डीम्ड यूनिवर्सिटी) : त्रिपाठी, डॉ. शिवेन्द्र प्रताप 2009

**शोध पत्र :-**

1. तबला वादन में निहित सौन्दर्य : माईणकर, पं0 सुधीर, मार्च, 2009
2. भारतीय संगीत में तबले का स्थान : ताड़े, प्रो0 गजानन, जनवरी, 1974
3. ताल वाद्यों में मुखड़ा नहीं मोहरा एक विचार : श्रीवास्तव, आचार्य फरवरी, 2008
4. तबला संगत के आदर्श लेखक : मिश्र, पं0 ईश्वर लाल, अगस्त, 2013
5. तबला वादन में प्रयुक्त मुखड़े का समीक्षात्मक विवेचन : कुमार, डॉ. ऋषितोष जून, 2006

**पुस्तकें :-**

1. अवनद्ध वाद्य सिद्धान्त एवं वादन परम्परा, बम्बन, डॉ. महेंन्द्रप्रसाद, चंडीगढ, 2008
2. तबले का उद्गम, विकास, (अभिषेक पब्लिकेशन चंडीगढ़) और वादन शैलियाँ (हिन्दीमाध्यम, कार्यान्वन, निदेशालय, दिल्ली), शुक्ल, डॉ. योगमाया, 1987
3. पखावज और तबले के घराने एवं परम्पराएँ (पं0 के. की. एस. जिजिना स्वर–साधना समिति, मुम्बई), मिस्त्री, डॉ. आबान ई. 2000
4. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन (मध्यप्रदेश, हिन्दी ग्रंथ अकादमी): सेन, डॉ. अरूण कुमार, 2005

उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के पश्चात यह ज्ञात हुआ है कि उपशास्त्रीय गायन शैलियों के साथ तबला–संगत पर साहित्य नगण्य है। उपशास्त्रीय संगीतात्मक गायन शैलियों पर पुस्तक **प्रो० सुधा सहगल** द्वारा लिखित पुस्तक **बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत** में केवल गायन शैलियों पर ही विवरण प्राप्त होते हैं, तबला संगत पर कोई चर्चा नहीं है। एक अन्य पुस्तक **लक्ष्मी नारायण गर्ग** द्वारा लिखित **उपशास्त्रीय संगीत अंक** में भी तबला–संगत का कोई उल्लेख नहीं है।

अतः उपशास्त्रीय संगीत के साथ तबला–संगत का गहन अध्ययन करने की दृष्टि से शैली के अनुसार कलात्मकता का सृजन करने के उद्देश्य से तथा विभिन्न गायन शैलियों के साथ उत्कृष्ट तबला–संगत सीखने व प्रयोग करने की दृष्टि से निम्न विषय का चयन किया गया है–

**विषय कथन :–**"उपशास्त्रीय गायन शैलियों में तबला–संगत का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

**अध्ययन की आवश्यकता :–** जैसा कि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ उपशास्त्रीय गायन शैलियों एवं तबला–संगत पर सामग्री का नितांत अभाव है एसी दशा में प्रस्तावित शोध पर कार्य करने की आवश्यकता अधिक हो जाती है।

तबला विषय के छात्र छात्राओं को भी तबला–संगत के विभिन्न पहलुओं को जानने की अत्यंत आवश्यकता है जिससे वे लिखित सामग्री के आधार पर लाभान्वित हो सकते हैं।

**अध्ययन का महत्व :–** प्रस्तावित शोध का महत्व इसके अन्तर्गत समाहित होने वाले क्रियात्मक तत्वों में निहित होगा। उपशास्त्रीय गायन शैलियों के साथ तबला–संगत अत्यन्त सूझ–बूझ भरा कृत्य होता है जिस पर न तो लेखन/क्रियात्मक कार्य हुआ है अतः उपशास्त्रीय गायन शैलियों व तबले की वादन शैली के समन्वित रूप को प्रस्तावित शोध , उजागर करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा।

किसी भी शोधार्थी के लिए शोध का महत्व उसकी जीवन यात्रा में परिपक्वता व गहन सोच का परिचायक होता है किन्तु संगीत विषय में यह सोच और अधिक परिपक्व होकर चिंतनशील, समृद्ध व सांगीतिक रूप से रचनात्मक हो जाती है जिसका महत्व शोधार्थी के लिए तो होगा ही व भविष्य में आने वाले शोधार्थियों के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा ।

प्रस्तावित शोध संगीत विषयक अन्तर सम्बन्धी शोध क्षेत्रों में शोधरथ होकर अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होगा क्योंकि इसके अन्तर्गत गायन एवं वादन दो क्रियात्मक क्षेत्रों का समन्वय कर शोध कार्य किया जाएगा ।

**<u>उद्देश्य :-</u>**

- उपशास्त्रीय गायन शैलियों का अध्ययन एवं विभिन्न विधाओं को खोजना।
- तबला–संगत के विषय में विद्वानों व कलाकारों के साक्षात्कार द्वारा विभिन्न क्रियात्मक पक्षों का अध्ययन ।
- तबला–संगत के विभिन्न क्रियात्मक पक्षों का अध्ययन करना ।
- गायन शैली के अनुसार तबला–संगत के मौलिक स्वरूप र्निमित करना ।
- उपशास्त्रीय गायन शैलियों निहित विभिन्न तालों का सूक्ष्म निरीक्षण करना।
- ध्वन्यांकित सामग्री द्वारा गायन एवं वादन के समन्वयात्मक पक्षों को क्रियात्मक रूप से अध्ययन करना।
- विभिन्न प्रस्तुतियों की रिकॉर्डिंग के आधार पर उपशास्त्रीय गायन शैलियों में तबला–संगत का सूक्ष्म निरीक्षण कर विश्लेषण करना।

**<u>अध्ययन के स्रोत :-</u>**

प्रस्तावित शोध को संचालित करने के लिए विभिन्न पुस्तकालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों से सामग्री एकत्रित की जाएगी साथ ही साथ विभिन्न संगीत अकादमियों तथा विभिन्न आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्रों से भी ध्वन्यांकित सामग्री एकत्रित की जाएगी। सी0डी0, डी0वी0डी0, कैसेट तथा इण्टरनेट के माध्यम से दृश्य एवं श्रव्य सामग्री उपलब्ध की जाएगी।

**<u>अध्ययन की कार्यविधि एवं उपकरण :-</u>**

प्रस्तावित शोध को संचालित करने हेतु व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा। शोध उपकरणों जैसे :– प्रश्नावली एवं साक्षात्कार का प्रयोग किया जाएगा तथा सांगीतिक उपकरणों जैसे– हारमोनियम एवं तबला का प्रयोग किया जाएगा।

विद्युत उपकरणों जैसे :– लैपटॉप, विडियो कॉन्फ्रेंसिंग एवं विडियो कैमरे का प्रयोग किया जाएगा।

**<u>अध्ययन का परिसीमांकन :–</u>** विभिन्न उपशास्त्रीय गायन शैलियों में से अध्ययन को केवल ठुमरी, दादरा, टप्पा एवं सादरा इन चार गायन शैलियों तक ही परिसीमांकन किया जाएगा।

**<u>अध्यायों का विभाजन :–</u>**

**प्रथम अध्याय** :– सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण ।

**द्वितीय अध्याय** :– 1.उपशास्त्रीय गायन शैलियाँ– एक परिचयात्मक अध्ययन।

2.तबला–संगत – एक परिचयात्मक अध्ययन।

**तृतीय अध्याय** :– 1.ठुमरी एवं दादरा का इतिहास, विकास एवं क्रियात्मक स्वरूप।

2.ठुमरी एवं दादरा तथा तबला–संगत।

**चतुर्थ अध्याय** :– 1.टप्पा एवं सादरा का इतिहास विकास एवं क्रियात्मक स्वरूप।

2.टप्पा एवं सादरा तथा तबला–संगत

**पंचम अध्याय** :– विभिन्न उपशास्त्रीय गायन शैलियाँ एवं तबला–संगत का विश्लेषण।

**षष्टम् अध्याय** :– चयनित उपशास्त्रीय गायन शैलियाँ एवं ताल प्रयोग का आधारभूत संकलन।

**<u>निष्कर्ष:–</u>**

**<u>उपसंहार :–</u>**

## <u>संदर्भ ग्रंथ सूची :–</u>


1. मिश्र, रमेश, दिल्ली घराने में संगीत का योगदान, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली–2011
2. बम्बन, डा. महेन्द्र प्रसाद, अवनद्य वाद्य सिद्वान्त एवं वादन परम्परा, अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ.– 2008
3. खण्डे, डा. कलाश्री, मध्य प्रदेश में शास्त्रीय संगीत की विकास यात्रा, निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली– 1995
4. चौधरी, विमलाकान्त राय, भारतीय संगीत कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ बी–45–47, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–1975
5. गर्ग, लक्ष्मी नारायण, उपशास्त्रीय संगीत अंक, संगीत कार्यालय– 2003

6. सहगल, सुधा, बेगम अख़्तर व उपशास्त्रीय संगीत, राधा पब्लिकेशन– 2007

**7.** उपाध्याय, सूर्यनारायण, मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश, कमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली– 2002

**–: प्रश्नावली :–**

प्रस्तावित शोध की रूप रेखा निर्मित करने से पूर्व विभिन्न विद्वानों एवं कलाकारों से पूँछी गयी प्रश्नावली –

- प्रमुख उपशास्त्रीय गायन शैलियाँ कौन–कौन सी हैं?
- अल्पप्रचलित उपशास्त्रीय गायन शैलियाँ कौन–कौन सी हैं?
- लुप्त उपशास्त्रीय गायन शैलियाँ कौन–कौन सी हैं?
- उपशास्त्रीय संगीत का इतिहास क्या है?
- उपशास्त्रीय संगीत के विकास पर आपका मत क्या है?
- क्या किसी प्रांत विशेष की गायन शैलियाँ प्रथक हैं? अथवा सभी प्रान्तों में एकसमान गायी बजाई जाती है?
- भाषा के अनुसार गायन शैलियों में कोई अंतर आता है?
- रागों का कितना प्रयोग गायन शैलियों में होता है?
- गायन के विभिन्न तत्वों जैसे :– आलाप, बोलालाप, बोलबाँट का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है?
- उपशास्त्रीय गायन शैलियाँ तथा तबला–संगत के समन्वय का आधार कया हैं?
- उपशास्त्रीय गायन शैलियाँ के साथ प्रयुक्त होने वाली प्रचलित व अप्रचलित तालें कौन–कौन सी हैं?
- गायन तथा तबला–संगत का सामंजस्य तथा समरूकता किस प्रकार निर्मित की जाती है?
- लग्गी–लड़ियों का प्रयोग किसी चयनित गायन शैली में ही होता है अथवा सभी में प्रयोग किया जाता है।
- लग्गी–लड़ियों के विभिन्न प्रकार क्या हैं?

- उपशास्त्रीय गायन शैलियों के साथ प्रयुक्त होने वाले विभिन्न प्रकार के ठेके कौन–कौन से हैं?
- यदि लग्गी–लड़ियाँ जिस गायन शैली में लगाई जाती हैं तो उसकी शुरूआत अथवा बढ़त किस प्रकार होती है?
- ठुमरी गायन शैली में तबला–संगत के अन्तर्गत कहरवा, जत, अथवा दीपचन्दी के ठेके की लय को धीमा करके ही क्यों बजाया जाता है?
- ठुमरी गायन शैली के प्रारम्भिक भाग से चयनित तालों जैसेः– कहरवा, जत, अथवा दीपचन्दी आदि के ठेके से संगत की शुरूआत की जाती है किन्तु ठुमरी के अन्तिम भाग में तीनताल अथवा कहरवा ताल पर ही लग्गी–लड़ियॉ ही क्यों लगाई जाती है?